भारतीय रुपए का मूल्यह्रास

प्रलिम्सि के लयि:

अवमूल्यन बनाम मुद्रा का मूल्यह्रास, भारतीय रुपए का मूल्यह्रास।

मेन्स के लयि:

भारतीय रुपए के वर्तमान मूल्यह्रास का कारण और प्रभाव।

चर्चा में क्यों?

सतिंबर-दसिंबर 2021 की तमिाही में भारतीय मुद्रा में 2.2% की गरिावट आई। मुद्रा का यह मूल्यह्रास (Depreciation of Currency) देश के शेयर बाज़ार से 4 बलियिन डॉलर मूल्य के वैश्वकि फंडों के बाहर नकिलने के कारण है।

- मुद्रा के मूल्य में आई इस गरिावट ने भारतीय रुपए को एशिया की सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली मुद्रा बना दयिा है।

प्रमुख बदिु

- **मूल्यह्रास के बारे में:**
  - मुद्रा का मूल्यह्रास/अवमूल्यन अस्थायी वनिमिय दर प्रणाली में मुद्रा के मूल्य में गरिावट है।
  - रुपए के मूल्यह्रास का मतलब है कि डॉलर के मुकाबले रुपए का कमज़ोर होना।
    - इसका मतलब है कि रुपिया अब पहले की तुलना में कमज़ोर है।.
    - उदाहरण के लयि पहले एक अमेरिकी डॉलर 70 रुपए के बराबर हुआ करता था। अब एक अमेरिकी डॉलर 76 रुपए के बराबर है जसिका अर्थ है कि डॉलर के मुकाबले रुपए का अवमूल्यन हुआ है यानी एक डॉलर को खरीदने में अधकि रुपए लगते हैं।
- **भारतीय रुपए के मूल्यह्रास का प्रभाव:**
  - रुपए में गरिावट भारतीय रज़िर्व बैंक के लयि एक दोधारी तलवार (नकारात्मक एवं सकारात्मक) की भाँति होती है।
    - **सकारात्मक प्रभाव:** एक कमज़ोर मुद्रा महामारी के समय नए आर्थकि सुधार के बीच नर्यात को प्रोत्साहति कर सकती है।
    - **नकारात्मक प्रभाव:** यह आयातति मुद्रास्फीति का जोखमि उत्पन्न करता है और केंद्रीय बैंक के लयि ब्याज दरों को रकिॉर्ड स्तर पर लंबे समय तक बनाए रखना मुश्कलि बना सकता है।

मुद्रा का अभमिूल्यन और अवमूल्यन

- **लचीली वनिमिय दर प्रणाली (Floating Exchange Rate System)** में बाज़ार की ताकतें (मुद्रा की मांग और आपूर्ति) मुद्रा का मूल्य नर्धारति करती हैं।
- **मुद्रा अभमिूल्यन :** यह कसी अन्य मुद्रा की तुलना में एक मुद्रा के **मूल्य में वृद्धि** है।
  - सरकार की नीति, ब्याज दर, व्यापार संतुलन और व्यापार चक्र सहति कई कारणों से मुद्रा के मूल्य में वृद्धि होती है।
  - मुद्रा अभमिूल्यन कसी देश की **नर्यात गतविधि को हतोत्साहति** करता है क्योंकि विदेशों से वस्तुएँ खरीदना सस्ता हो जाता है, जबकि विदेशी व्यापारियों द्वारा देश की वस्तुएँ खरीदना महँगा हो जाता है।
- **मुद्रा अवमूल्यन:** यह एक लचीली वनिमिय दर प्रणाली में **मुद्रा के मूल्य में गरिावट** है।
  - आर्थकि बुनयिादी संरचना, राजनीतकि अस्थरिता या जोखमि से बचने के कारण मुद्रा अवमूल्यन हो सकता है।
  - मुद्रा अवमूल्यन कसी देश की **नर्यात गतविधि को प्रोत्साहति** करता है क्योंकि विदेशों से वस्तुएँ खरीदना महँगा हो जाता है, जबकि विदेशी व्यापारियों द्वारा संबंधति देश की वस्तुएँ खरीदना सस्ता हो जाता है।

अवमूल्यन और मूल्यह्रास

- सामान्य तौर पर अवमूल्यन और मूल्यह्रास प्रायः एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग किये जाते हैं।
- उन दोनों का एक ही प्रभाव है- मुद्रा के मूल्य में गिरावट जो आयात को अधिक महँगा बनाती है, और निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्द्धी बनाती है।
- हालाँकि उन्हें लागू करने के तरीके में अंतर है।
- अवमूल्यन तब होता है जब किसी देश का केंद्रीय बैंक अपनी विनिमय दर को एक निश्चित या अर्द्ध-स्थिर विनिमय दर में कम करने का निर्णय लेता है।
- मूल्यह्रास तब होता है जब एक मुद्रा के मूल्य में अस्थायी विनिमय दर में गिरावट होती है।
- **भारतीय रुपए के वर्तमान मूल्यह्रास का कारण:**
    - **रिकॉर्ड-उच्च व्यापार घाटा:** उच्च आयात के बीच नवंबर में भारत का व्यापार घाटा बढ़कर लगभग 23 बिलियन डॉलर हो गया।
        - यह बढ़ता व्यापार घाटा तेल की कीमतों में उछाल से प्रेरित है।
    - **आरबीआई और फेडरल रिज़र्व के बीच नीतिगत अंतर: अमेरिकी अर्थव्यवस्था में बेहतर विकास और फेडरल रिज़र्व (यूएस सेंट्रल बैंक) द्वारा पेश किये गए अनुकूल ब्याज की उम्मीदों के अनुरूप USD को मज़बूत करना।**
        - रिज़र्व बैंक अपने भंडार का निर्माण करने और किसी भी अस्थिरता के लिये खुद को तैयार करने हेतु लगातार डॉलर खरीद रहा है।
    - **पूंजी का बहिर्वाह:** शेयरों से विदेशी पूंजी के पलायन ने बेंचमार्क 'एसएंडपी बीएसई सेंसेक्स इंडेक्स' को अक्तूबर 2021 में अब तक के उच्चतम स्तर से लगभग 10% कम कर दिया है।
    - **ओमीक्रोन संबंधी चिंताएँ:** वर्तमान में ओमीक्रोन वायरस संस्करण संबंधी चिंताएँ वैश्विक बाज़ारों में हलचल मचा रही हैं।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/depreciation-of-indian-rupee